1

छोटा ख्याल

(क)

राग-यमन

हिन्दुस्तानी संगीत पाठ्यक्रम के सिद्धांत के अंतर्गत पहले बताए गए विभिन्न विषयों, जैसे– राग, ताल, इनके तत्त्व, स्वर लिपि पद्धति इत्यादि का वर्णन अब प्रायोगिक भाग में किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में दिये गये रागों का आगे के पाठों में बंदिशों के उदाहरणों के माध्यम से एवं उनकी स्वरलिपि का वर्णन शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली के संदर्भ में आलाप तथा तान सहित एवं ध्रुपद शैली के संदर्भ में दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित किया जा रहा है। इन्हीं बंदिशों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दिये गये सी.डी. को सुनें।

राग यमन 'कल्याण' ठाठ से उत्पन्न राग है। यह एक अत्यंत प्रचलित राग है, जिसमें मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध एक ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप एवं तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात् आप :

- राग यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया बिलावल एवं काफी के स्वरूप का वर्णन कर सकेंगे;
- ख्याल विधा के दिए गए रागों की बंदिश गा सकेंगे;
- ख्याल विधा के दिए गए ताल के बोलों का उच्चारण कर सकेंगे।

राग परिचय

ठाठ–कल्याण
गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
वादी–गंधार
संवादी – निषाद
जाति – सम्पूर्ण–सम्पूर्ण
सारे स्वर शुद्ध/, मध्यम तीव्र
आरोह – सा रे ग म॑ प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म॑ ग रे सा
पकड़ – नि॒ रे ग रे सा, प म॑ ग, रे, सा

आरोह गाते समय निषाद से प्रारम्भ किया जाता है तथा पंचम वर्जित रखा जाता है।

टिप्पणी

राग-यमन

बंदिश

स्थायी

सदा शिव भजमना निस दिन
रिद्ध सिद्ध दायक विनत सहायक
नाहक भटकत फिरत अनवरत।

अंतरा

शंकर भोला पार्वती रमना,
सीत तपोनग भूषण अनुपम,
काहे ना सुमिरत भटकत तू फिरत।।

राग यमन - त्रिताल (16 मात्रा)

स्थायी

								नि	ध	–	प	मं	प	ग	मं
								स	दा	ऽ	शि	व	भ	ज	म
								0				3			
प	–	–	–	प	मं	ग	रे	नि़	रे	ग	रे	ग	मं	प	ध
न	ऽ	ऽ	ऽ	नि	स	दि	न	रि	ध	सि	ध	दा	ऽ	य	क
X				2				0				3			
प	मं	ग	रे	ग	रे	सा	ऽ	नि़	रे	ग	मं	प	ध	नि	सां
वि	न	त	स	हा	ऽ	य	क	ना	ऽ	ह	क	भ	ट	क	त
X				2				0				3			
रें	सां	नि	ध	प	मं	ग	मं								
फि	र	त	अ	न	व	र	त								
X				2											

अंतरा

								मं	ग	मं	घ	सां	–	सां	सां
								शं	ऽ	क	र	भो	ऽ	ला	ऽ
								0				3			

टिप्पणी

नि	रें	गं	रें	सां	नि	–	प	गं	ऽ	रें	सां	रें	–	सां	नि
पा	ऽ	र्व	ती	र	म	ना	ऽ	सि	–	त	त	पो	–	न	ग
X				2				0				3			
ध	–	प	मं	ग	ऽ	रे	सा	नि़	रे	ग	मं	प	ध	नी	सां
भू	ऽ	ष	ण	अ	नु	प	म	का	ऽ	हे	ना	सु	मि	र	त
X				2				0				3			
रें	सां	नि	ध	प	मं	ग	मं								
भ	ट	क	त	तू	फि	र	त								
X				2											

आलाप स्थायी

सदाशिव भज मन निस दिन

	0				3				X				2			
1.	नि़	–	रे	–	ग	–	–	–	ग	–	रे	–	नि़	रे	सा	–
2.	नि़	–	रे	–	ग	–	–	–	मं	–	रे	–	ग	–	–	–
	मं	–	ग	–	रे	–	–	–	नि़	–	रे	–	सा	–	–	–
3.	नि़	रे	ग	मं	प	–	–	–	मं	–	–	–	ग	–	–	–
	नि़	रे	ग	मं	प	–	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–
4.	नि़	रे	ग	मं	प	–	–	–	मं	–	ध	–	प	–	–	–
	प	मं	ग	–	रे	–	–	–	नि़	–	रे	–	सा	–	–	–
5.	ग	–	मं	–	प	–	–	–	मं	ध	नी	ध	प	–	–	–
	मं	–	ध	–	–	नि	–	–	मं	ध	नी	ध	सां	–	–	–

अंतरा

शंकर ..... रमना

	O				3				x				2			
1.	मं	–	ध	–	नि	–	–	–	मं	ध	नी	ध	सां	–	–	–
2.	नि	–	रें	–	गं	–	–	–	गं	–	रें	–	नि	रें	सां	–

तानें

स्थायी

सदाशिव भज मना

	x				2			
(i)	नि़रे	गमं	पध	निसां	निध	पमं	गरे	साऽ

टिप्पणी

(ii)	निृरे	गमं	पध	निसां	|	पमं	गरे	गरे	साऽ
(iii)	मंध	निसां	निध	पमं	|	गमं	पमं	गरे	साऽ
(iv)	सांनी	धप	निध	पमं	|	पध	पमं	गरे	साऽ
(v)	गग	रेसा	नीनी	धप	|	सांनी	धप	मंग	रेसा

अंतरा

शंकर भोला

	x				2			
(i)	सांनी	धप	गमं	रेसा	निृरे	गमं	पध	निसां
(ii)	निृरे	गमं	रेग	मंध	गमं	धनी	मंध	नीसां

पाठगत प्रश्न 1.1

1. राग यमन के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. राग यमन का गायन समय क्या हैं?
3. यमन राग का आरोह-अवरोह लिखिए।

(ख)

राग भैरव (छोटा ख्याल)

टिप्पणी

यह राग भैरव ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसमें ऋषभ तथा धैवत स्वर कोमल हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध ख्याल की एक बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ– भैरव

गायन समय– प्रात:काल

वादी स्वर– धैवत

संवादी स्वर– ऋषभ

जाति– सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

ऋषभ एवं धैवत कोमल, बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं।

न्यास स्वर– मध्यम, मुख्य स्वर समूह गम रे सा।

आरोह	–	सा	रे,	ग	म,	प	ध,	नि	सां।
अवरोह	–	सां	नि	ध,	प	म,	ग	रे,	सा।
पकड़	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	प।	

राग भैरव (छोटाख्याल)

ताल - तीन ताल (16 मात्रा)

बंदिश

स्थायी:

धन-धन मूरत कृष्ण मुरारी
सुलच्छन गिरिधारी छवि सुंदर लागे अति प्यारी

अंतरा:

बंसीधर मनमोहन सुहावे
बलि-बलि जाऊँ मोरे मन भावे
सब रंग ज्ञान विचारी।।

टिप्पणी

भैरव स्वरलिपि:

स्थायी

म		नि				ग		ग				ग			
ग	म	ध	ध	पम	प	म	ग	रे	–	मग	(म)	रे	–	सा	–
ध	न	ध	न	मू ऽ	ऽ	र	त	कृ	ऽ	ष्ण ऽ	मु	रा	ऽ	री	–
0				3				X				2			
नि़	नि़							ग				सा		म	
सा	ध़	–	नि़	सा	सा	सा	सा	रे	–	सा	–	नि़	सा	ग	म
सु	ल	ऽ	च्छ	ऽ	न	गि	रि	धा	ऽ	री	ऽ	छ	बि	सुं	ऽ
0				3				X				2			
		नि		ध		नि									
प	प	ध	–	सां	–	ध	प	पध	निसां	सारें	सांनि	धनि	धप	मग	म
द	र	ला	ऽ	गे	ऽ	अ	ति	प्या ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
0				3				X				2			

अंतरा

म				नि											
प	–	प	–	ध	ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	–
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न	मो	ह	न	सु	हा	ऽ	वे	ऽ
0				3				X				2			
सां		रें						नि				नि			
रें	रें	मं	मं	रें	–	सां	–	सां	सां	रें	सां	ध	–	प	–
ब	लि	ब	लि	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	मो	रे	म	न	भा	ऽ	वे	ऽ
0				3				X				2			
म						नि									
ग	म	ग	म	प	–	ध	प	पध	निसां	सारें	सांनि	धनि	धप	मग	म
स	ब	रं	ग	ज्ञा	ऽ	न	वि	चा ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
0				3				X				2			

टिप्पणी

आलाप

धन धन मूरत कृष्ण मुरारी

	0				3				X				2			
1.	सा	–	–	–	ध	नि	सा	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
2.	सा	रे	ग	म	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
3.	ग	म	ध	–	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
4.	ग	म	प	ध	नि	–	–	–	ध	–	–	–	प	–	–	–
	ग	म	ध	ध	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
5.	ग	म	प	ध	नि	–	–	–	ध	–	नी	–	सां	–	–	–

अंतरा

बंसीधर मन मोहन सुहावे

(i)	ध	–	नि	–	सां	–	–	–	म	प	ध	नि	सां	–	–	–
(ii)	ध	–	नि	–	सां	–	–	–	गं	–	मं	–	रें	–	सां	–
	0				3				X				2			

स्थायी तान

धन-धन मूरत

	x				2			
(i)	सारे	गम	पध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ
(ii)	गम	पध	निसां	रेंसां	निध	पम	गरे	साऽ
(iii)	सारे	गम	पम	गम	पध	पम	गरे	साऽ
(iv)	साग	मप	गम	पध	निनि	धप	मग	रेसा
(v)	धनि	सारें	सांनि	धप	गम	धप	मग	रेसा

अंतरा

बंसीधर मन

	x							2				
(i)	सां	नि	ध	प	म	ग	रे सा	सा	ग	म	प	धनि सांऽ
(ii)	धनि		सारें		सांनि		धप	म	ग	म	प	धनि सांऽ

पाठगत प्रश्न 1.2

1. राग भैरव के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. राग भैरव की कौन-सी प्रकृति है?
3. राग भैरव का गायन समय क्या है?

(ग)

राग-भूपाली (छोटा ख्याल)

राग भूपाली कल्याण ठाठ से उत्पन्न हुआ है। यह बहुत ही आसान एवं मधुर राग है, जिसके आरोह तथा अवरोह दोनों में पांच स्वर हैं। अर्थात्, मध्यम तथा निषाद स्वर वर्जित हैं। अतः, इसकी जाति औड़व-औड़व है। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में छोटा ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ – कल्याण

वादी स्वर – गंधार

सम्वादी स्वर – धैवत

गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर

जाति – औड़व-औड़व

राग भूपाली के वर्जित स्वर – मध्यम एवं निषाद

आरोह – सा रे ग, प ध, सां

अवरोह – सां ध प ग रे सा

पकड़ – ग, रे, सा, ध़, सा रे, ग, प ग, ध प ग, रे सा

बंदिश (छोटा ख्याल)

ताल – तीन ताल (16 मात्रा)

स्थायी

दरशन दीजे त्रिभुवन पाली

त्रिभुवन नायक बहुसुख दायक

बिलम करो मत हाली

टिप्पणी

अंतरा

अति उदार गत अगम निगम के
रसिकन के रस ख्याली
सिरी कमलापति बृज के वासी
कर खुशाल प्रतिपाली

स्वरलिपि

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–	सा	ध़	सा	रे	ग	–	ग	–
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ	त्रि	भु	व	न	पा	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			
प	प	प		प		सां		ध				ध	सां		
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
त्रि	भु	व	न	ना	ऽ	य	क	ब	हु	सु	ख	दा	ऽ	य	क
0				3				x				2			
ध				रें											
सां	सां	रें	रें	ध	–	सां	सां	पध	सारें	गरें	सांसां	पध	सांसां	धप	गरे
बि	ल	म	क	रो	ऽ	म	त	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				x				2			
रे															
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–								
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ								
0				3											

अन्तरा

ग					ध										
प	प	ग	प	–	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–
अ	ति	उ	दा	ऽ	र	ग	त	अ	ग	म	नि	ग	म	के	ऽ
0				3				x				2			
ध	सां							ध				ध			
सां	सां	ध	ध	सां	–	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	ध
र	सि	क	न	के	ऽ	र	स	ख्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			

टिप्पणी

ध		ध		सां				प		प		ग			
प	ध	सां	सां	ध	–	प	प	ग	रे	ग	प	रे	–	सा	–
सि	रि	क	म	ला	ऽ	प	ति	बृ	ज	के	ऽ	वा	ऽ	सी	ऽ
0				3				x				2			
ध		गं													
सां	सां	गं	रें	–	सां	रें	सां	पध	सांसां	धप	पध	सांसां	धप	गरे	सा–
क	र	खु	शा	ऽ	ल	प्र	ति	पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				x				2			

आलाप

स्थायी

दरशन दीजे त्रिभुवन पाली

	0				3				x				2			
1.	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	ग	–	रे	–	सा	ध़	सा	–
2.	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	प	–	–	–	ग	–	–	–
	प	–	ग	–	रे	–	–	–	सा	–	ध़	–	सा	–	–	–
3.	ग	रे	प	–	ग	–	–	–	ध	प	ग	रे	ग	रे	सा	–
4.	ग	रे	ग	–	प	–	–	–	ग	प	ध	–	सां	–	–	–

अन्तरा

अति उदार गत अगम निगम के

0				3				x				2			
सां	–	–	–	सांध	–	सां	–	ग	प	ध	–	सां	–	–	–

तान

स्थायी

दरशन दीजे

	x				2			
1.	सारे	गप	धसां	धप	गप	धप	गरे	सा–
2.	सारे	गप	धसां	रेंसं	धप	गरे	गरे	सा–
3.	सारे	गरे	गप	गप	धसां	धप	गरे	सा–
4.	गरे	गप	धसां	धप	गप	धप	गरे	सा–
5.	सारे	गप	धसां	रेंसां	रेंसां	धप	गरे	सा–

पाठगत प्रश्न 1.3

1. राग भूपाली का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
2. राग भूपाली के वर्णित स्वर कौन-से हैं।
3. राग भूपाली का गायन समय लिखिए।

टिप्पणी

(घ)

राग-अल्हैया बिलावल (छोटा ख्याल)

यह राग बिलावल ठाठ से उत्पन्न होता है। अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। अवरोह में कोमल निषाद तथा गंधार का वक्र प्रयोग है। इस राग का सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है। जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दीये गये सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

आरोह - सा रे, ग रे, ग प ध, नि ध नि सां

अवरोह - सा नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - ग रे, ग प, ध, नि सां

ठाठ - बिलावल

वादी - धैवत

संवादी - गांधार

जाति - षाड़व संपूर्ण

गायन समय - दिन का द्वितीय प्रहर

बंदिश

ताल - तीन ताल (16 मात्रा)

स्थायी

बलि बलि जाऊ मधुर सुर गाओ अबकि बेर मेरे
कुंवर कन्हैया नदं हि नाच दिखावो

अन्तरा

तारी दे दे अपने कर की परम प्रीत उपजावो
आन जौन्त धुन सुन डर पट कत मो भुज कंठ लगावो

स्वरलिपि

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
प		सां		प				म				म			
सां	सां	ध	प	ग	प	म	ग	रे	गम	प	मग	रे	–	सा	–
ब	लि	ब	लि	जा	ऽ	ऊं	म	धु	रऽ	सु	रऽ	गा	ऽ	वो	ऽ
0				3				x				2			
नि								सा				सा			
सा	रे	ग	म	रे	सा	रे	सा	ध़	नि़	सा	नि़	ध़	नि़	ध़	प़
अ	ब	कि	बे	ऽ	र	मे	रे	कुं	व	र	कं	न्हैं	ऽ	या	ऽ
0				3				x				2			
प				प		प	ध								
ग	–	गम	रे	ग	प	नि	नि	सांसां	गरें	सांनि	धनि	सांनि	धप	मग	मरे
नं	ऽ	दऽ	ही	ना	ऽ	च	दि	खाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोऽ
0				3				x				2			
	स	.	स												
सां	सां	ध	प												
ब	लि	ब	लि												
0															

अंतरा

				ध											
प	–	प	–	नि	ध	नि	–	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	–
ता	ऽ	री	ऽ	दे	ऽ	दे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	क	र	की	ऽ
0				3				x				2			
												स			
सां	रें	गं	मं	रें	सां	रें	सां	ध	नि	सां	–	ध	नि		प
प	र	म	प्री	ऽ	त	उ	प	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो
0				3				x				2			
			सां								ग				
धनि	सं	सां	ध	नि	प	मग	मरे	रे	गम	प	मग	म	रे	सा	सा
आऽ	ऽ	न	जौ	ऽ	न्त	धुऽ	नऽ	सु	नऽ	ड	रऽ	प	ट	क	त
0				3				x				2			
प		प		प			ध								
ग	–	ग	मरे	ग	प	नि	नि	सां	–	सांसां	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा
मो	ऽ	भु	जऽ	कं	ऽ	ठ	ल	गा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोऽ
0				3				x				2			

सां सां ध प						
ब लि ब लि						
0						

टिप्पणी

आलाप

बलि बलि जाऊं मधुर सुर गावो

1. - गरे ग प | ध नि ध - | - प - - - | - - -
   0 | 3 | x 2 |

2. सा रे ग रे सा - - नि़ ध़ नि़ ध़ प़ - - - ग़ प़
   ध़नि़ सा - - सा रे ग रे ग प - ग प ध नि ध
   प ध ग प म - ग - - रे ग प म ग म रे - सा

तान

बलि बलि जाऊं -

1. - गरे गप धनि | धप मग रेसा नि़सा
   x | 2

बलि-बलि जाऊं मधुर सुर गावो

2. - गरे गप धनि | सां - - धनि धप | मग रेग पम ग- | - मरे सानि़ सा -
   0 3 | | x | 2

पाठगत प्रश्न 1.4

1. राग अल्हैया विलावल के वादी-सम्वादी स्वर लिखिए।
2. अल्हैया बिलावल राग का गायन समय क्या है।
3. राग अल्हैया बिलावल का संक्षिपत परिचय दीजिए।

टिप्पणी

(ङ)

राग-काफी (छोटा ख्याल)

यह राग काफी ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसी आधार पर, गंधार एवं निषाद स्वर कोमल हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् एक ताल में बद्ध एक बंदिश की संपूर्ण स्वरलिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ – काफी

वादी – पंचम

संवादी – षड्ज

जाति– सम्पूर्ण–सम्पूर्ण

गायन समय - मध्य रात्रि

आरोह	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	नि	सां	
अवरोह	–	सां	नि	ध	प	म,	ग	रे,	सा	
पकड़	–	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प।

बंदिश

ताल - एक ताल (12 मात्रा)

स्थायी

गुनि गावत काफी राग
खरहरप्रिय मेल जनित
कोमलगति उज्ववल पर
सुर पंचम वादी साध

अंतरा

सरल सरूप विपश्चित
मानत सब सुध अविकल
आश्रय गुनि चतुर कहत

टिप्पणी

कोमल गनि उज्वल पर
सुर पंचम वादी साध

स्वरलिपि

स्थायी

7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
		म		म							
पध	मग	ग	–	रेसा	रे	ग	–	म	प	–	प
गुऽ	निऽ	गा	ऽ	वऽ	त	का	ऽ	फि	रा	ऽ	ग
0		3		4		x		0		2	
नि	सां					म					
सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	–	रे	सा	रे	सा
ख	र	ह	र	प्रि	य	मे	ऽ	ल	ज	नि	त
0		3		4		x		0		2	
नि		म									
सा	–	रे	रे	ग	ग	म	–	प	प	ध	ध
को	ऽ	म	ल	ग	नि	उ	ऽ	ज्व	ल	प	र
0		3		4		x		0		2	
सां											
नि	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	–	म	प	–	मप
सु	र	पंऽ	ऽ	च	म	वा	ऽ	दि	सा	ऽ	धऽ
0		3		4		x		0		2	
पध	ध										
गुऽ	नि										
0											

अंतरा

प											
म	म	म	प	नि	–	सां	नि	सां	–	सां	सां
स	र	ल	स	रू	ऽ	प	वि	प	ऽ	श्चि	त
0		3		4		x		0		2	
नि	सां	रे	गं	रें	सां	रें	सां	रें	नि	सां	सां
मा	ऽ	न	त	स	ब	सु	ध	अ	वि	क	ल
0		3		4		x		0		2	
रे		ध				म					
सां	–	नि	ध	म	प	ग	ग	रे	सा	रे	नि़
आ	ऽ	श्र	य	गु	नि	च	तु	र	क	ह	त
0		3		4		x		0		2	
सा	–	रे	रे	ग	ग	म	–	प	प	ध	ध
को	ऽ	म	ल	ग	नि	ऊ	ऽ	ज	ल	प	र
0		3		4		x		0		2	

टिप्पणी

नि	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	–	म	प	–	मप
सु	र	पंऽ	ऽ	च	म	वा	ऽ	दि	सा	ऽ	धऽ
0		3		4		x		0		2	
पध	ध										
गुऽ	नि										
0											

आलाप (काफी)

गुनि गावत

	x		0		2		0		3		4	
1.	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प	–	–	–
	–	प	ग	रे	–	सा						
2.	रे	रे	ग	ग	म	म	प	ध	नि	ध	प	म
	ग	रे	–	सा	–	–						
3.	म	प	ध	नि	ध	नि	ध	प	म	ग	रे	–
	सा	–	–	–	–	–						
4.	ग	म	प	म	प	ध	नि	सां	नि	प	ग	रे
	म	ग	रे	रे	नि	सा						
5.	म	प	ध	नि	सां	–	–	–	रें	नि	ध	प
	म	ग	रे	–	रे	ग	रे	रे	म	ग	रे	–
	नि	–	नि	–सा								

तान

गुनि गावत

	x		0		2	
1.	रे ग	रे म	ग रे	सा रे	नि सा	रे सा
2.	म ग	म प	ध प	म ग	रे सा	नि सा
3.	म प	ध नि	ध प	म ग	रे सा	नि सा
4.	म प	ध नि	सां नि	ध प	म ग	रे सा

गुनि गावत

	0		3		4	
5.	सा रे	ग म	प ध	नि सां	नि ध	प म
	x		0		2	
	ग रे	सा रे	ग म	ग रे	सा रे	नि सा
	0		3		4	
6.	सा रे	ग म	प ध	नि सां	सां रें	सां नि
	x		0		2	
	धप	म ग	रे सा	रे ग	म ग	रे सा

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 1.5

1. काफी राग कौन से थाट का है?
2. काफी राग की जाति क्या है?
3. काफी राग का गायन समय क्या है?

आपने क्या सीखा

1. राग यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैयाबिलावल तथा काफी की अवधारणा।
2. दिए हुए रागों का वर्णन।
3. दिए हुए रागों में स्वरलिपि तथा आलाप तान के साथ बंदिश का वर्णन।

पाठांत प्रश्न

1. राग यमन की बंदिश लिखिए।
2. राग भैरव का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. राग अल्हैया बिलावल के विषय में लिखिए।
4. राग भूपाली का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. राग भैरव और काफी में अंतर लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. रागयमन कल्याण घाट से उत्पन्न राग है। इसमें मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं।
2. रात्री के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।
3. आरोह – सा रे ग म॑ प ध नि सां

   अवरोह – सां नि ध प म॑ ग रे सा

टिप्पणी

1.2

1. राग भैरव, भैरव थाट से उत्पन्न राग है। इसमें रे-ध कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध होते हैं।
2. यह गंभीर एवं शांत प्रकृति का राग है।
3. सुबह गाया जाता है।

1.3

1. राग भूपाली कल्याण थाट का राग है। यह पांच स्वरों का सरल एवं मधुर राग है।
2. इसमें म-नि वर्णित होते हैं।
3. रात्री के प्रथम प्रहर में गाया बजाया जाता है।

1.4

1. बादी-ध, संवादी-ग
2. सुबह गया जाता है।
3. राग अल्हैया बिलावल, बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाला राग है। इसमें कोमल नि का प्रयोग अवरोह में होता है, बाकी सब स्वर शुद्ध है।

1.5

1. काफी थाट
2. संपूर्ण-संपूर्ण
3. मध्य रात्री

2

ध्रुपद

(क)

राग–यमन

ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत में एक जोरदार गायकी है, जिसे राग में गाय जाता है। ध्रुपद की प्रकृति भक्ति रस की होता है। ध्रुपद शब्द की उत्पत्ति ध्रुव शब्द से होती है।

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग यमन की बंदिश, उसकी स्वर लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद विधा को पहचान पायेंगे;
- उल्लेखित ध्रुपद विधा में यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल एवं काफी रागों का विस्तार में वर्णन कर पायेंगे;
- ध्रुपद विधा में प्रयुक्त राग पहचान पायेंगे;
- ध्रुपद विधा की उल्लेखित राग को प्रस्तुत कर पायेंगे।

राग परिचय

थाट – कल्याण

वादी – गंधार

संवादी - निषाद

जाति - संपूर्ण–संपूर्ण

गायन समय – रात्रि का पहला प्रहर

आरोह – नि़ रे ग म प ध नि सां

अवरोह - सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ - नि़ रे ग रे प रे ग रे नि़ रे सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल - चौ ताल (12 मात्रा)

स्थाई

चलो हटो जाओ बनवारी
छांडो बैयां मोरी
ढीट लंगर लाज न
आवत तुम कहाँ
हंसती सखियां सारी

अंतरा

छीनत दधि मग
रोकत, बाट चलत

टिप्पणी

नित टोकत
करकी गई सब
चूड़ियां बिगरि गई
सब सारी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प	नि	ध	नि	म	प	ग	प	रे	–	सा	–
च	लो	ह	टो	जा	ओ	ब	न	वा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा	रे	सा	प	–	प	प	प	नि	ध	प	प
छां	ऽ	डो	बै	ऽ	या	मो	री	ढी	ऽ	ट	लं
x		0		2		0		3		4	
प	प	ग	म	प	प	ग	म	प	प	रे	रे
ग	र	ला	ऽ	ज	न	आ	ऽ	व	त	तु	म
x		0		2		0		3		4	
सां	सां	नि	ध	प	ग	म	प	रे	–	सा	–
क	हाँ	हं	स	ती	स	खि	याँ	सा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	–	ग	ग	प	प	सां	ध	सां	–	सां	सां
छी	ऽ	न	त	द	धि	म	ग	रो	ऽ	क	त
x		0		2		0		3		4	
सां	रें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	नि	ध	प	प
बा	ऽ	ट	च	ल	त	नि	त	टो	ऽ	क	त
x		0		2		0		3		4	
प	नि	ध	नि	प	–	म	ग	म	ध	प	–
क	र	की	ग	ई	ऽ	स	ब	चू	ड़ि	याँ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

टिप्पणी

नि ध	प प	ग म̄	प प	रे –	सा –
बि ग	रि ग	ई –	स ब	सा ऽ	री ऽ
x	0	2	0	3	4

स्थायी

दुगुन

x	0	2	0	3	4
पनि धनि	म̄प गप	रे- सा	सारे सा प	-प पप	निध पप
चलो हटो	जाओ बन	वाऽ रीऽ	छांऽ डोबै	ऽया मोरी	ढीऽ टलं
x	0	2	0	3	4
पप गम̄	पप गम̄	पप रेरे	संसं निध	पग म̄प	रे- सा-
गर लाऽ	जन आऽ	वत तुम	कहाँ हंस	तीस खियाँ	साऽ रीऽ

तिगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								प नि ध	नि मे प	ग प रे	- सा -
								च लो ह	टो जा ओ	ब न वा	ऽ री ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा रे सा	प - प	प प नि	ध प प	प प ग	म̄ प प	ग म̄ प	प रे रे	सां सां नि	ध प ग	मे प रे	- सा -
छां ऽ डो	बै ऽ या	मो री ढी	ऽ ट लं	ग र ला	ऽ ज न	आ ऽ व	त तुम	क हाँ हं	स ती स	खि याँ सा	ऽ री ऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन

x	0	2	0	3	4
पनिधनि म̄पगप	रे-स- सारेसाप	-पपप निधपप	पपगम̄ पपगम̄	पपरेरे सांसांनिध	पगम̄प रे-सा-
चलोहटो जाओबन	वाऽरीऽ छांऽडोबै	ऽयामोरी ढींऽटलं	गरलाऽ जनआऽ	वततुम कहाँहंस	तीसखियाँ साऽरीऽ

टिप्पणी

अन्तरा

दुगुन

प–	गग	पप	सांध	सां–	सांसां	सारें	गरें	सांसां	निध	निध	पप
छीऽ	नत	दधि	मग	रोऽ	कत	बाऽ	टच	लत	नित	टोऽ	कत
x		0		2		0		3		4	
पनि	धनि	प–	मग	मध	प–	निध	पप	गम	पप	रे–	सा–
कर	किग	ईऽ	सब	चुडि	याँऽ	बिग	रिग	ई–	सब	साऽ	रीऽ
x		0		2		0		3		4	

तिगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								प – ग	ग प प	सां ध सां	– सां भां
								छीऽन	तदधि	मगरो	ऽकत
								3		4	
सारेंगं	रेंसांसां	निधनि	धपप	पनिध	निप–	मगम	धप–	निधप	पगम	पपरे	–सा–
बाऽट	चलत	नितटो	ऽकत	करकि	गईऽ	सबचु	ड़ियाँऽ	बिगरि	गई–	सबसा	ऽरीऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन

प – ग	पपसांथ	सां–सांसां	सांरेंगंरें	सांसांनिध	निधपप	पनिधनि	प–मग	मधप–	निधपप	गमपप	रे–सा–
छंऽनत	दधिमग	रोऽकत	बाऽटच	लतनित	टोडकत	करविग	ईऽसब	चुड़ियाँ	बिगरिग	ई–सब	साऽरीऽ
x		0		2		0		3		4	

पाठगत प्रश्न 2.1

1. ध्रुपद के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. ध्रुपद की प्रकृति के विषय में लिखिए।
3. राग यमन के वादी संवादी कौन-से है?

टिप्पणी

(ख)

राग – भैरव (ध्रुपद)

हमने पिछले पाठ में शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग भैरव की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में सूलताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही सूलताल है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाठ – भैरव

वादी – धैवत

संवादी – ऋषभ

गायन समय – प्रातः काल

जाति – संपूर्ण-संपूर्ण

रागसूचक स्वर – ग, म रे, सा

आरोह – सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह – सां, नि, ध, प म, ग, रे, सा

पकड़ – सा, ग, म, ध, प, ध, प, म, ग, म, रे, सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल-झांप ताल (10 मात्रा)

स्थायी

आदि मध्यांत जोगत जोगी शिव
कनक विष अमियद विषभोगी शिव।

अंतरा

नाभि के कमल ते तीन मूरत भई
भीन जाने सोच नरख भोगी शिव।

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध̲	–	ध̲	प	ध̲	म	म	प	ग	म
आ	ऽ	दि	म	द	अं	ऽ	त	जो	ऽ
x		0		2		3		0	
रे̲	रे̲	रे̲	ग	प	म	ग	रे̲	सा	सा
ग	ऽ	त	जो	ऽ	गी	ऽ	शि	व	ऽ
x		2		0		3		0	
सा	नि़	सा	ग	म	प	ध̲	नि	सां	रें̲
क	न	क	वि	ष	अ	मि	य	ऽ	द
x		0		2		3		0	
सां	नि	ध̲	प ध̲	नि	ध̲	प म	प	म ग	म
वि	ष	ऽ	भो ऽ	ऽ	गी	ऽऽ	शि	ऽऽ	व
x		0		2		3		0	

अंतरा

म	म	प	ध̲	ध̲	नि	सां	नि	सां	सां
ना	ऽ	भि	के	ऽ	क	म	ल	ते	ऽ
x		0		2		3		0	
ध̲	ध̲	ध̲	नि	सां	रें̲	सांनि	सां	ध̲	प
ती	ऽ	न	मू	ऽ	र	त ऽ	भ	ई	ऽ
x		0		2		3		0	
म	म	प	ग	म	प	ध̲	नि	सां	रें̲
भी	ऽ	न	जा	ऽ	ने	ऽ	सो	ऽ	चे
x		0		2		3		0	
सां	नि	ध̲	प ध̲	नि	ध̲	प म	प	ग	म
न	र	ख	भो ऽ	ऽ	गी ऽ	ऽ	शि	ऽ	व
x		0		2		3		0	

टिप्पणी

स्थायी

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध–	धप	धम	मप	गम	रेरे	रेग	पम	गरे	सासा
आऽ	दिम	दअे	ऽत	जोऽ	गऽ	तजो	ऽगी	ऽशि	वऽ
x		0		2		3		0	

सानि	साग	मप	धनि	सांरें	सांनि	धपध	निध	पमप	मगम
कन	कवि	षअ	मिय	ऽद	विष	ऽभोऽ	ऽगी	ऽऽशि	ऽऽव
x		0		2		3		0	

इस प्रकार तिगुन एक मात्रा में तीन एवं चौगुन एक मात्रा में चार बोल तथा अंतरे की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.2

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद की बंदिश ..... ताल में निबध्द है।
2. राग भैरव का मुख्य स्वर समुदाय ..... है।
3. राग भैरव का वादी ..... और संवादी स्वर ..... है।

(ग)

राग-भूपाली (ध्रुपद)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग भूपाली की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि के साथ दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को देखें।

राग परिचय

थाट - कल्याण

वादी - गंधार

संवादी - धैवत

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

जाति - औड़व-औड़व

आरोह - सा रे ग प, ध सां

अवरोह - सां ध प, ग रे सा

पकड़ - ग, रे, सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल - चौताल (12 मात्रा)

स्थायी

तू ही सूर्य तू ही चंद्र
तू ही पवन तू ही अगन
तू ही आप तू आकाश
तू ही धरनी यजमान।।

अंतरा

भव रूद्र उग्रसर्व
पशुपति सम-समान

टिप्पणी

ईशान भीम सकल
तेरे ही अष्टनाम।।

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग	ग	रे	ग	प	प	ग	ग	रे	सा	रे	सा
तू	ऽ	ही	सू	ऽ	र्य	तू	ऽ	ही	चं	ऽ	द्र
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	ध़	सा	ग	रे	प	प	प	ग	ग	ग
तू	ऽ	ही	प	व	न	तू	ऽ	ही	अ	ग	न
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	रे	प	ग	प	सां	सां	ध	सां	सां	सां
तू	ऽ	ही	आ	ऽ	प	तू	ऽ	आ	का	ऽ	श
x		0		2		0		3		4	
सां	गं	रें	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
तू	ऽ	ही	ध	र	नी	य	ज	ऽ	मा	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	प	ग	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
भ	व	ऽ	रु	ऽ	द्र	उ	ऽ	ग्र	स	ऽ	र्व
x		0		2		0		3		4	
सां	ध	–	सां	सां	रें	गं	रें	रें	सां	ध	प
प	शु	ऽ	प	ति	ऽ	स	म	ऽ	स	मा	न
x		0		2		0		3		4	
प	ग	रे	ग	प	सांध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
ई	ऽ	ऽ	शा	ऽ	नऽ	भी	ऽ	म	स	क	ल
x		0		2		0		3		4	
सां	गं	रें	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ही	अ	ऽ	ष्ट	ना	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	

स्थायी

दुगुन

गग रेग तूऽ हीसू x	पप गग ऽर्य तूऽ 0	रेसा रे सा हीच ऽद्र 2	सासा धसा तूऽ हीप 0	गरे पप वन तूऽ 3	पग गग हीअ गन 4
सासा रेप तूऽ हीआ x	गप सांसां ऽप तूऽ 0	धसां सांसां आका ऽश 2	सांगं रेंसां तूऽ हीध 0	पध सांध रनी यज 3	पग रेसा ऽमा ऽन 4

इसी प्रकार तिगुन नौंवी मात्रा से आरम्भ होकर एक मात्रा में तीन एवं चौगुन सम से आरम्भ होकर एक मात्रा में चार बोल तथा अंतरे की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.3

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद विधा ..... में निबद्ध है।
2. चौताल में ..... मात्रा होती है।
3. राग भूपाली की जाति ..... है।

टिप्पणी

(घ)

राग-अल्हैया बिलावल (धमार)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग अल्हैया बिलावल की बंदिश, उसकी स्वर लिपि तथा आलाप एवं ताल सीखे। प्रस्तुत पाठ में धमार ताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की धमार शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाट - बिलावल

वादी - धैवत

सम्वादी - गन्धार

जाति - षाड़व - सम्पूर्ण

गायन का समय - प्रातः काल

आरोह - सा रे ग रे ग प ध नि सां

अवरोह - सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - म ग म रे, ग प, ध नि सां

धमार (बन्दिश)

ताल-धमार ताल (14 मात्रा)

स्थायी

अनोखे होरी खेलन लागे

अन्तरा

निस ही निस रंग भरत सांवर

कछु सोवत कछु जागे

संचारी

लाल गुलाल लिए कर ललन

नाद नंदन अनुरागे

टिप्पणी

आभोग

कृष्ण जीवन लच्छिराम के प्रभु प्यारे
बने हैं मरगज बागे

स्वरलिपि

स्थायी

														रे
														अ
11	12	13	14	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	
ग	प	नि	–	सां	सां	सां	सां	ध	ध	निप	म	ग	रे	
नो	ऽ	खे	ऽ	हो	ऽ	री	खे	ऽ	ल	नऽ	ला	गे	ऽ	
3				x					2		0			

अन्तरा

ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	ध	ध	निप	म	ग	ग
नि	स	ही	ऽ	नि	स	रं	ग	भ	र	ऽत	सां	व	र
3				x					2		0		
ग	प	निध	नि	सां	सां	सां	सांनि	सांध	नि	प	म	ग	रे
क	छु	सोऽ	ऽ	व	त	ऽ	कऽ	ऽऽ	ऽ	छु	जा	गे	ऽ
3				x					2		0		

संचारी

ग	रे	ग	प	म	ग	ग	ग	रे	ग	प	म	ग	रेसा
ला	ऽ	ल	गु	ला	ऽ	ल	लि	ये	क	र	ल	ल	ऽन
3				x					2		0		
ग	–	रे	ग	प	प	–	ध	धनि	प	म	म	ग	रे
नं	ऽ	द	नं	द	न	ऽ	अ	नुऽ	ऽ	रा	ऽ	गे	ऽ
3				x					2		0		

आभोग

ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	धनि	प	प–	म	–	ग
कृ	ऽ	ष्	ण	जी	व	न	–	लच्छिरा	ऽ	मके	प्रभु	प्या	रे
3				x					2		0		
ग	प	निध	नि	सां	गं	रें	सां	–	सांध	निप	म	ग	रे
ब	ने	हैऽ	ऽ	म	र	ऽ	ग	ऽ	जऽ	ऽऽ	ना	गे	ऽ
3				x					2		0		

टिप्पणी

स्थायी एवं अंतरा

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
				रेग	पनि	–सां	सांसां	सांध	धनिप	मग	रेग	पध	निसां
				अनो	ऽखे	ऽहो	ऽरी	खेऽ	लनऽ	लागे	ऽनि	सही	ऽनि
					2		0			3			
सांसां	सांध	धनिप	मग	गम	पनिध	निसां	सांसां	सांनि	सांध	निप	मग	रेरे	गप	नि–
सरं	गभ	रऽत	सांव	रक	छुसोऽ	ऽव	तऽ	कऽऽऽ		ऽछु	जागे	ऽअ	नोऽ	खेऽ
x					2		0			3				

इस प्रकार तिगुन में एक मात्रा में तीन और चौगुन में एक मात्रा में चार बोल होंगे तथा संचारी एवं आभोग के दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.4

निम्नलिखित की जोडियाँ बनाइए।

1. थाट – म ग म रे, ग प ध नि सां
2. वादी – सां रे ग रे ग प ध नि सा
3. आरोह – धैवन
4. पपुड – बिलावल

(ङ)

राग-काफी (ध्रुपद)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग काफी की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाट - काफी

वादी - पंचम

संवादी - षड़्ज

जाति - संपूर्ण-संपूर्ण

गायन का समय - मध्यरात्रि

आरोह – सा रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह – सां, नि, ध, प म, ग, रे, सा

पकड़ – सा सा, रे रे, ग ग, म म, प

बंदिश (ध्रुपद)

ताल-चौताल (12 मात्रा)

स्थायी

आये री मेरे धाम श्याम
कुंवर कृष्ण उनके चरण
नैनन सौं पर सो

अंतरा

वंशी वट तरवर
वंशी लिए साज नटवर
सजि री औड़ पियरो पट
धाय आई री मेरे

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सा	रे	रे	ग	ग	रे	प	–	ध	ग	–	रे
आ	ऽ	ये	री	मे	रे	धा	ऽ	म	श्या	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	
म	ग	रे	रे	नि	सा	रे	ग	प	ध	नि	सां
कुं	व	र	कृ	ऽं	ष्ण	उ	न	के	च	र	ण
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	म	प	ग	रे	प	ग	रे	रे	नि	सा
नै	ऽ	न	न	सौं	ऽ	प	र	ऽ	सो	ऽं	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	–	प	ध	नि	सां	सां	सां	रें	नि	सां	रें
वं	ऽ	शी	ऽ	व	ट	त	र	क	र	वं	ऽ
x		0		2		0		3		4	
रें	मं	रें	सं	सां	सां	सां	रें	नि	सां	सां	–
शी	ऽ	लि	ए	सा	ऽ	ज	न	ट	व	ऽ	र
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	–
स	ऽ	जि	ऽ	री	ऽ	औ	ऽ	रो	पि	य	रो
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	म	प	ग	रे	ग	रे	रे	रे	नि	सा
प	ट	धा	ऽ	य	ऽ	आ	ऽ	ई	री	मं	रे
x		0		2		0		3		4	

स्थायी

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
						सारे	रेग	गरे	प–	धग	–रे
						आऽ	येरी	मेरे	धाऽ	मश्या	ऽम
मग	रेरे	निसा	रेग	पध	निसां	निध	मप	गरे	पग	रेरे	नि़सा
कुंव	रकृ	ऽष्ण	उन	केच	रण	नैऽ	नन	सौऽ	पर	ऽसो	ऽऽ

इसी प्रकार तिगुन एक मात्रा में तीन तथा चौगुन एक-मात्रा में चार स्वर लेकर गाये जाते हैं। अंतरे के दुगुन, तिगुन तथा चौगुन भी इसी प्रकार गाये जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 2.5

1. राग काफी का वादी स्वर कौन सा है?
2. काफी राग की जाति लिखिए।
3. काफी राग के थाट का नाम लिखिए।

आपने क्या सीखा

1. ध्रुपद एक प्राचीन जोरदार गायकी है।
2. ध्रुपद की प्रकृति भक्ति रस की है।
3. राग यमन, भैरव-भूपाली, अल्हैया बिलावल तथा काफी में स्वरलिपि सहित ध्रुपद की बंदिशें हैं।
4. उल्लिखित रागों का सामान्य परिचय

पाठांत प्रश्न

1. राग यमन में ध्रुपद की बंदिश स्वरलिपि सहित लिखिए।
2. राग भैरव में ध्रुपद की एक बंदिश स्वरलिपि सहित लिखिए।
3. राग भूपाली का आरोह-अवराह, पकड, वादी, सम्वादी, वर्णित स्वर तथा जाति लिखिए।
4. राग अल्हैया बिलावल का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत की एक प्राचीन जोरदार विधा है। इसे ध्रुवपद भी कहा जाता है, जिसे राग में गाया जाता है।
2. इसकी प्रकृति भक्ति की है।
3. वाही-ग, संवादी-नि

2.2

1. चौताल 2. ग म रे सा 3. वाही-ध संवाही-रे

2.3

1. चौताल 2. 12 मात्रा 3. औडव-औडव

2.4

1. थाट - बिलावल 2. वाही-धैवत
3. आरोह-सारेगरे, गपधनिया 4. पकड़-मगमरे, गप, धनिसां

2.5

1. पंचम 2. संपूर्ण-संपूर्ण 3. काफी